# SYLLABUS FOR

# THE FOUR-YEAR UNDERGRADUATE PROGRAMME (FYUP)

## SEMESTER- 1,3,5,7

## As per provision of NEP-2020
## Implemented from Academic Year 2022 onwards

## DEPARTMENT

## OF

# SANSKRIT

## GOVT. DIGVIJAY AUTONOMOUS P.G. COLLEGE, RAJNANDGAON (C.G.)

## 2025-26

SYLLABUS OF 4 YEARS UG PROGRAM (FYUP)

AS PER NEP 2020

(GOVT. DIGVIJAY AUTONOMOUS P.G. COLLEGE, RAJNANDGAON)

B.A. (Multiple Major)

SUBJECT - SANSKRIT(SEMESTER I - VIII)

Session - 2025-26

| | SEMESTER | COURSE TYPE | COURSE CODE | COURSE TITLE | CREDIT | Max marks | ESE | IA |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| FIRST YEAR | I | DSC | SNSC-01 | नाटक, व्याकरण और भाषाकौशल | 4 | 100 | 70 | 30 |
| | | GE | SNGE -01 | नाटक, व्याकरण और भाषाकौशल | 4 | 100 | 70 | 30 |
| | | VAC | SNVAC-01 | संभाषण कौशल | 2 | 50 | 35 | 15 |
| | II | DSC | SNSC - 02 | प्राचीन एवं आधुनिक साहित्य | 4 | 100 | 70 | 30 |
| | | GE | SNGE - 02 | प्राचीन एवं आधुनिक साहित्य | 4 | 100 | 70 | 30 |
| SECOND YEAR | III | DSC | SNSC- 01 | नाटक तथा व्याकरण | 4 | 100 | 70 | 30 |
| | | DSE | SNSE- 01 | व्याकरण अनुवाद तथा व्याकरण शास्त्र का इतिहास | 4 | 100 | 70 | 30 |
| | IV | DSC | SNSC- 04 | कथा तथा साहित्येतिहास | 4 | 100 | 70 | 30 |
| | | DSE | SNSE- 02 | भारतीय संस्कृति | 4 | 100 | 70 | 30 |
| | | SEC | SNSC- 01 | भारतीय रंगमंच | 2 | 50 | 35 | 15 |
| THIRD YEAR | V | DSC | | वैदिक साहित्य का इतिहास | 4 | 100 | 80 | 20 |
| | | DSE-I | | वेद | 4 | 100 | 80 | 20 |
| | | DSE-II | | व्याकरण एवं व्याकरण शास्त्र का इतिहास | 4 | 100 | 80 | 20 |
| | | SEC | | योग के मूलभूत तत्व | 2 | 50 | 40 | 10 |
| | VI | DSC | | लौकिक साहित्य का इतिहास | 4 | 100 | 80 | 20 |
| | | DSE-I | | भाषाविज्ञान | 4 | 100 | 80 | 20 |
| | | DSE-II | | काव्य | 4 | 100 | 80 | 20 |
| | | SEC | | प्रोजेक्ट | 2 | 50 | 40 | 10 |

SYLLABUS OF 4 YEARS UG PROGRAM (FYUP)
AS PER NEP 2020
(GOVT. DIGVIJAY AUTONOMOUS P.G. COLLEGE, RAJNANDGAON)

B.A.(Honours)
SUBJECT - SANSKRIT(SEMESTER VII - VIII)
Session - 2025-26

| SEMESTER | COURSE TYPE | COURSE CODE | COUSE TITLE | CREDIT | Max marks | ESE | IA |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| VII | DSC | | वैदिक भाषा साहित्यं च | 4 | 100 | 70 | 30 |
| | GE | | व्याकरणं भाषा विज्ञानं च | 4 | 100 | 70 | 30 |
| | DSE | | दर्शनम् | 4 | 100 | 70 | 30 |
| | DSE | | साहित्यशास्त्रम् | 4 | 100 | 70 | 30 |
| | DSE | | सामान्य संस्कृत | 4 | 100 | 70 | 30 |
| VIII | DSC | | वैदिक भाषा साहित्यं च | 4 | 100 | 70 | 30 |
| | DSE | | व्याकरणं भाषा विज्ञानं च | 4 | 100 | 70 | 30 |
| | DSE | | दर्शनम् | 4 | 100 | 70 | 30 |
| | DSE | | साहित्यशास्त्रम् | 4 | 100 | 70 | 30 |
| | DSE | | काव्यम् | 4 | 100 | 70 | 30 |

B.A.(Honours With Research)

| SEMESTER | COURSE TYPE | COURSE CODE | COURSE TITLE | CREDIT | Max marks | ESE | IA |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| VII | DSC | | वैदिक भाषा साहित्यं च | 4 | 100 | 70 | 30 |
| | DSE | | व्याकरणं भाषा विज्ञानं च | 4 | 100 | 70 | 30 |
| | DSE | | दर्शनम् | 4 | 100 | 70 | 30 |
| | DSE | | साहित्यशास्त्रम् | 4 | 100 | 70 | 30 |
| | GE | | सामान्य संस्कृत | 4 | 100 | 70 | 30 |
| VIII | DSC | | वैदिक भाषा साहित्यं च | 4 | 100 | 70 | 30 |
| | DSE | Any One | व्याकरणं भाषा विज्ञानं च | 4 | 100 | 70 | 30 |
| | DSE | | दर्शनम् | 4 | 100 | 70 | 30 |
| | DSE | | साहित्यशास्त्रम् | 4 | 100 | 70 | 30 |
| | DSE | | काव्यम् | 4 | 100 | 70 | 30 |
| | | | DESSERTATION | 12 | 300 | | |

# SYLLABUS OF 4 YEARS UG PROGRAM (FYUP)
## AS PER NEP 2020
(GOVT. DIGVIJAY AUTONOMOUS P G COLLEGE, RAJNANDGAON)

## B.A. (Multiple Major) - DEGREE COURSE
(Session 2025-26)

## Major 1- SANSKRIT

| | SEMESTER | COURSE TYPE | COURSE CODE | PAPER TITLE | CREDIT | Max marks | ESE | IA |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| THIRD YEAR | V | DSC | | वैदिक साहित्य का इतिहास | 4 | 100 | 80 | 20 |
| | | DSE-I | | वेद | 4 | 100 | 80 | 20 |
| | | DSE-II | | व्याकरण एवं व्याकरण शास्त्र का इतिहास | 4 | 100 | 80 | 20 |
| | | SEC | | योग के मूलभूत तत्व | 2 | 50 | 40 | 10 |
| | VI | DSC | | लौकिक संस्कृत साहित्य का इतिहास | 4 | 100 | 80 | 20 |
| | | DSE-I | | भाषाविज्ञान | 4 | 100 | 80 | 20 |
| | | DSE-II | | काव्य | 4 | 100 | 80 | 20 |
| | | SEC | | प्रोजेक्ट | 2 | 50 | 40 | 10 |

ESE- End Semester Exam, IA-Internal Assessment

Instruction for Question paper setting

End Semester Exam (ESE) for DSC and DSE

There will be 03 sections of question of 80 marks

Section A- section A will be very short answer type questions consisting 8 questions of 2 marks, two question from each unit.

Section B- section B will be short answer type questions consisting 4 questions of 6 marks each, one question from each unit with internal choice.

Section C- section B will be long answer (Discreptive) type questions consisting 4 questions of 10 marks each, one question from each unit with internal choice.

End Semester Exam (ESE) for SEC

There will be 8 questions of 8 marks each, out of which any 5 question to be answer.Total marks will be 40.

Minimum Pass Marks 40%

| Section | Maximum Marks (80) | | Maximum Marks (40) | |
|---|---|---|---|---|
| A | 2 x 8 = 16 | Very short answer type questions consisting 8 questions of 2 marks, two question from each unit. | 8 x 5 = 40 | 8 questions of 8 mark each, out of which any 5 question to be answer. |
| B | 6 x 4 = 24 | Short answer type questions consisting 4 questions of 6 marks each, one question from each unit with internal choice. | | |
| C | 10 x 4 = 40 | long answer (Discreptive) type questions consisting 4 questions of 10 marks each, one question from each unit with internal choice | | |

GOVT. DIGVIJAY AUTONOMOUS P.G. COLLEGE, RAJNANDGAON (C.G.)

# FYUP (CBCS/LOCF Course)

**Department: - SANSKRIT**

| | |
|---|---|
| Session: **2025 – 26** | Program: **B.A.** |
| Semester: **V** | Subject: **Sanskrit** |
| Course Type: **DSC** | Course Code: ..... |
| Course Title: | वैदिक साहित्य का इतिहास |
| Credit: **4** | Lecture: **60** |
| M.M. 100 = **(ESE 80+IA 20)** | Minimum Passing Marks: **40%** |

| Title | वैदिक साहित्य का इतिहास |
|---|---|
| **Course Learning Outcome:** | ➢ विद्यार्थी विशाल वैदिक वाङ्मय उसके महत्व एवं उद्देश्यों से परिचित होंगे।<br>➢ भारतीय वैदिक परंपरा के ऐतिहासिक अध्ययन से गौरव का अनुभव करेंगे।<br>➢ संहिता के साथ साथ ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषद् का विशिष्ट परिचय प्राप्त कर सकेंगे।<br>➢ वेदों के अध्ययन में वेदांगों की भूमिका से अवगत होंगे। |

| Units | Lectures | Lectures (15 x 4 = 60) | Credits |
|---|---|---|---|
| **I** | 15 | • ऋग्वेद- अर्थ, विभाजन, शाखाएं,विषयवस्तु, महत्व<br>• यजुर्वेद- अर्थ, विभाजन, शाखाएं,विषयवस्तु, महत्व<br>• सामवेद- अर्थ, विभाजन, शाखाएं,विषयवस्तु, महत्व<br>• अथर्ववेद- अर्थ, विभाजन, शाखाएं,विषयवस्तु, महत्व | 1 |
| **II** | 15 | • ऋग्वेदीय ब्राह्मण - ऐतरेय, कौषीतकी(शांखायन)<br>• यजुर्वेदीय ब्राह्मण - शतपथ, तैत्तिरीय<br>• सामवेद - पंचविंश, षडविंश, सामविधान, वंश<br>• अथर्ववेद - गोपथ<br>इनका परिचय, विशेषताएं, प्रतिपाद्य विषय | 1 |
| **III** | 15 | • उपनिषद् - ईश, केन कठ, प्रश्न, मुंडक, मांडुक्य,ऐतरेय, तैत्तिरीय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक<br>इन उपनिषदों का परिचय, अर्थ, प्रतिपाद्य विषय, महत्व | 1 |
| **IV** | 15 | • वेदांगपरिचय - शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद, ज्योतिष<br>इनका परिचय एवं महत्व | 1 |

**अनुशंसित ग्रंथः-**


1. वैदिक साहित्य और संस्कृति- आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन, वाराणसी
2. वैदिक साहित्य का इतिहास- पारसनाथ द्विवेदी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
3. वैदिक साहित्य का इतिहास- डॉ. कर्ण सिंह, साहित्य भंडार, मेरठ
4. वैदिक वांङ्मय का इतिहास– श्री रमाकांत शास्त्री, चौखम्बा, वाराणसी
5. वैदिक साहित्य और संस्कृति– वाचस्पति गैरोला, चौखम्बा, वाराणसी
6. वैदिक साहित्य का इतिहास– कृष्ण कुमार, साहित्य भंडार, मेरठ
7. वैदिक साहित्य का इतिहास– डॉ. जयदेव वेदलंकार, भारतीय विद्या प्रकाशन


| पाठ्यक्रम समिति | | |
|---|---|---|
| क्र. | नाम | हस्ताक्षर |
| 1 | डॉ. ललित प्रधान | |
| 2 | डॉ. सुषमा तिवारी | |
| 3 | डॉ. हेमंत शर्मा | |
| 4 | डॉ. फागेश्वर साहू | |

GOVT. DIGVIJAY AUTONOMOUS P.G. COLLEGE, RAJNANDGAON (C.G.)

# FYUP (CBCS/LOCF Course)

**Department: -SANSKRIT**

| | |
|---|---|
| Session: **2025 - 26** | Program: **B.A.** |
| Semester: **V** | Subject: **Sanskrit** |
| Course Type: **DSE –II** | Course Code: ..... |
| Course Title: | वेद |
| Credit: **4** | Lecture: **60** |
| M.M. 100 = **(ESE 80+IA 20)** | Minimum Passing Marks: **40%** |

| **Title** | वेद |
|---|---|
| **Course Learning Outcome:** | ➢ वेदों मे निहित ज्ञान विज्ञान से परिचित होंगे।<br>➢ चारों संहिताओं के प्रमुख वैदिक देवताओं से संबंधित सूक्तों का परिचय, अध्ययन एवं ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।<br>➢ मानवमात्र के कल्याण के लिए मंत्रद्रष्टा ऋषियों की उदार भावना से परिचित होंगे।<br>➢ वैदिक सूक्तों के ऋषि, देवता, छंद से परिचित होंगे। |

| **Units** | **Lectures** | **Lectures (15 x 4 = 60)** | **Credits** |
|---|---|---|---|
| **I** | 15 | ऋग्वेद- अग्निसूक्त (1.1), संगठन सूक्त (10.191 | 1 |
| **II** | 15 | ऋग्वेद – हिरण्यगर्भ सूक्त (10.121), (सूर्यसूक्त 1.115) | 1 |
| **III** | 15 | यजुर्वेद – शिवसंकल्प सूक्त (34.1-6), रुद्रसूक्त(16.1-8) | 1 |
| **IV** | 15 | अथर्ववेद- काल सूक्त (19.53), सांमनस्य सूक्त (3.30) | 1 |

अनुशंसित ग्रंथ:-

1. वैदिक सूक्त चयनिका- डॉ.किरण टंडन,अंकित प्रकाशन,हल्द्वानी
2. वैदिक सूक्त संकलन– विजयशंकर पांडे
3. शिवसंकल्प सूक्त- (संस्कृत हिन्दी टीका सहित) डॉ. त्रिलोकी नाथ द्विवेदी, चौखम्बा साहित्य प्रकाशन, वाराणसी
4. ऋक्सूक्तनिकर:- उमाशंकर शर्मा ऋषि, चौखम्बा ऑरिएन्टालिया, वाराणसी
5. वैदिक संग्रह- कृष्णलाल, ईष्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली
6. ऋक सूक्त मंजूषा- प्रो. महावीर अग्रवाल, सत्य प्रकाशन, नई दिल्ली
7. ऋक्सूक्त समुच्चय– डॉ. रामकृष्ण आचार्य, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

| पाठ्यक्रम समिति | | |
|---|---|---|
| क्र. | नाम | हस्ताक्षर |
| 1 | डॉ. ललित प्रधान | |
| 2 | डॉ. सुषमा तिवारी | |
| 3 | डॉ. हेमंत शर्मा | |
| 4 | डॉ. फागेश्वर साहू | |

GOVT. DIGVIJAY AUTONOMOUS P.G. COLLEGE, RAJNANDGAON
(C.G.)

# FYUP (CBCS/LOCF Course)

**Department: - SANSKRIT**

| | |
|---|---|
| Session: **2025 - 26** | Program: **B.A.** |
| Semester: **V** | Subject: **Sanskrit** |
| Course Type: **DSE-II** | Course Code: ..... |
| Course Title: | व्याकरण एवं व्याकरणशास्त्र का इतिहास |
| Credit: **4** | Lecture: **60** |
| M.M. 100 = **(ESE 80+IA 20)** | Minimum Passing Marks: **40%** |

| **Title** | व्याकरण एवं व्याकरणशास्त्र का इतिहास |
|---|---|
| **Course Learning Outcome:** | ➢ विद्यार्थी का विश्वस्वीकृत सर्वश्रेष्ठ व्याकरणशास्त्र की विशेषताओं से परिचय होगा।<br>➢ व्याकरणशास्त्रकारों के ज्ञान से व्याकरण शास्त्र के उद्भव एवं विकास की जानकारी प्राप्त होगी।<br>➢ शब्दों के आधिकारिक ज्ञान के साथ पठन, लेखन एवं संभाषण में दक्षता प्राप्त होगी।<br>➢ व्याकरण का प्रारंभिक अध्ययन करने से विद्यार्थियों का भाषा पर अधिकार स्थापित होता है। |

| Units | Lectures | Lectures (15 x 4 = 60) | Credits |
|---|---|---|---|
| I | 20 | कृदन्त प्रकरण –<br>तव्यत्, अनीयर्, यत्, शतृ, शानच्, क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्,क्त, क्तवतु, ण्वुल्, तृच्, ल्युट्, ।<br>(लघुसिद्धान्तकौमुदी से) | 1.2 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| II | 20 | तद्धितप्रत्यय –<br>अण्, ढक्, त्व, तल्, इमनिच्, ठक्, इञ्, मतुप्, इनि, इतच्,ईयसुन्<br>इष्ठन्, तरप्, तमप्, ।<br>स्त्रीप्रत्यय –<br>टाप्, ङीप्, ।<br>(लघुसिद्धान्तकौमुदी से) | 1.2 |
| III | 10 | संस्कृत व्याकरणशास्त्र का इतिहास –<br>पाणिनि,कात्यायन,पतंजलि,भर्तृहरि,भट्टोजीदीक्षित-इनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व | 0.8 |
| IV | 10 | संस्कृत व्याकरणशास्त्र का इतिहास –<br>वामनजयादित्य,हरदत्तमिश्र,नागेशभट्ट,वरदराज-इनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व | 0.8 |

अनुशंसित ग्रंथ:-


1.लघुसिद्धान्तकौमुदी – श्रीधरानन्द शास्त्री

2.लघुसिद्धान्तकौमुदी – श्री महेश सिंह कुशवाहा,प्रकाशक- चौखम्बा विद्याभवन,वाराणसी

3.शीघ्रबोधव्याकरणम् – डा. पुष्पा दीक्षित, पाणिनीय शोध संस्थान, तेलीपारा, बिलासपुर

4.व्याकरणशास्त्र का इतिहास- युधिष्ठिर मीमांसक,रामलाल कपूर ट्रस्ट,रेवली


| पाठ्यक्रम समिति | | |
|---|---|---|
| क्र. | नाम | हस्ताक्षर |
| 1 | डॉ.ललित प्रधान | |
| 2 | डॉ.सुषमा तिवारी | |
| 3 | डॉ.हेमंत शर्मा | |
| 4 | डॉ. फागेश्वर साहू | |

GOVT. DIGVIJAY AUTONOMOUS P.G. COLLEGE, RAJNANDGAON (C.G.)

# FYUGP (CBCS/LOCF Course)

**Department: -SANSKRIT**

| | |
|---|---|
| Session: 2025-26 | Program: B.A. |
| Semester: **V** | Subject: **SANSKRIT** |
| Course Type: **SEC** | Course Code: ..... |
| Course Title: | योग दर्शन के आधारभूत तत्व |
| Credit: **2** | Lecture: **30** |
| M.M. 50 = **(ESE 40+IA 10)** | Minimum Passing Marks: **40%** |

| **Title** | योग दर्शन के आधारभूत तत्व |
|---|---|
| **Course Learning Outcome:** | ➢ योग विधा के आधारभूत तत्वों का ज्ञान प्राप्त होगा।<br>➢ योग की ओर विद्यार्थियों की रुचि जागृत होगी।<br>➢ योग कौशल का विकास विद्यार्थियों के स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से सहायक होगा।<br>➢ योग के क्षेत्र में रोजगार के अवसर तलाश सकेंगे।<br>➢ प्राचीन योग दर्शन को आधुनिक समय में प्रतिस्थापित करने में सहायता प्राप्त होगी। |

| UNIT | Lectures | Lectures (15 x 2 = 30) | Credits |
|---|---|---|---|
| **I** | 06 | योग दर्शन-योग का अर्थ एवं परिभाषा,उद्येश्य एवं महत्त्व | 01 |
| **II** | 06 | योग दर्शन का उद्भव एवं विकास (सामान्य परिचय अपेक्षित है) | 01 |
| **III** | 10 | अष्टांग योग का सामान्य परिचय | 01 |
| **IV** | 08 | प्रमुख भारतीय योगाचार्यों का परिचय – आदि शंकराचार्य, महर्षि पतंजलि, स्वामी विवेकानन्द योगी गोरक्षनाथ,महर्षि दयानंद सरस्वती,श्री अरविंद, ,महर्षि महेश योगी (सभी का सामान्य परिचय अपेक्षित है) | 01 |

अनुशंसितग्रन्थ –

1. पातंजल योगसूत्र- गीताप्रेस, गोरखपुर
2. भारतीय दर्शन - चंद्रधर शर्मा, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन
3. भारतीय दर्शन- आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा मंदिर प्रकाशन, वाराणसी
4. वेदों में योग विद्या- डॉ. योगेन्द्र पुरुषार्थी, यौगिक शोध संस्थान, हरिद्वार
5. योग विज्ञान- स्वामी विज्ञानानन्द, योग निकेतन ट्रस्ट, ऋषिकेश

| पाठ्यक्रम समिति | | |
|---|---|---|
| क्र. | नाम | हस्ताक्षर |
| 1 | डॉ. ललित प्रधान | |
| 2 | डॉ. सुषमा निवारी | |
| 3 | डॉ. हेमंत शर्मा | |
| 4 | डॉ. फागेश्वर साहू | |

GOVT. DIGVIJAY AUTONOMOUS P.G. COLLEGE, RAJNANDGAON (C.G.)

# FYUP (CBCS/LOCF Course)

**Department: -SANSKRIT**

| | |
|---|---|
| Session: **2025 – 26** | Program: **B.A.** |
| Semester: **VI** | Subject: **Sanskrit** |
| Course Type: **DSC** | Course Code: ..... |
| Course Title: | लौकिक साहित्य का इतिहास |
| Credit: **4** | Lecture: **60** |
| M.M. 100 = **(ESE 80+IA 20)** | Minimum Passing Marks: **40%** |

| **Title** | लौकिक साहित्य का इतिहास |
|---|---|
| **Course Learning Outcome:** | ➢ विद्यार्थी विशाल संस्कृत वाङ्मय से परिचित होंगे।<br>➢ भारतीय संस्कृति के स्तम्भ स्वरूप रामायण, महाभारत, पुराण के महत्व से अवगत होंगे<br>➢ आधुनिक संस्कृत साहित्य की प्रवृत्तियों का ज्ञान होगा |

| **Units** | **Lectures** | **Lectures (15 x 4 = 60)** | **Credits** |
|---|---|---|---|
| **I** | 15 | • रामायण- सामान्य परिचय, विषयवस्तु, उपजीव्यता, रामायण का महत्व<br>• महाभारत- सामान्य परिचय, विषयवस्तु, महाभारत का विकास, उपजीव्यता, महाभारत का महत्व<br>• पुराण- पुराण की परिभाषा, अष्टादश पुराणों का सामान्य परिचय, पुराणों का महत्त्व | 1 |
| **II** | 15 | • महाकाव्य- रघुवंशम्, कुमारसंभवम्, शिशुपालवधम्, किरातार्जुनीयम्, नैषधीयचरितम्<br>• खंडकाव्य- मेघदूतम्, गीतगोविंदम्<br>ग्रंथ एवं ग्रंथकारों का सामान्य परिचय | 1 |
| **III** | 15 | • गद्यकाव्य - कादंबरी, वासवदत्ता, हर्षचरितम्, दशकुमारचरितम्,<br>• कथासाहित्य- कथासरित्सागर, पञ्चतंत्रम्, वैतालपञ्चविंशति<br>ग्रंथ एवं ग्रंथकारों का सामान्य परिचय | 1 |
| **IV** | 15 | • नाटक- अभिज्ञानशाकुंतलम्, उत्तररामचरितम्, मृच्छकटिकम्, मुद्राराक्षसम्<br>• आधुनिक संस्कृत साहित्य एवं साहित्यकार- आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी, आचार्य अभिराज राजेन्द्र मिश्र, डॉ. श्रीमती पुष्पा दीक्षित<br>ग्रंथ एवं ग्रंथकारों का सामान्य परिचय | 1 |

अनुशंसित ग्रंथ:-


1. संस्कृत साहित्य का इतिहास – आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी
2. संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ. कपिल देव द्विवेदी, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी
3. संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास – आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
4. संस्कृत साहित्य का इतिहास – उमाशंकर शर्मा ऋषि, चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी
5. संस्कृत साहित्य का इतिहास – प्रीतिप्रभा गोयल, राजस्थानी ग्रंथगार, जोधपुर
6. आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास- प्रो. कलानाथ शास्त्री
7. संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. रामजी उपाध्याय, रामनारायण लाल बेनीमाधव, इलाहाबाद
8. पुराण विमर्श – आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
9. इतिहास पुराण का अनुशीलन- रमाशंकर भट्टाचार्य
10. संस्कृत महाकाव्य की परंपरा- डॉ. केशवराव मुसलगाँवकर, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी


| पाठ्यक्रम समिति | | |
|---|---|---|
| क्र. | नाम | हस्ताक्षर |
| 1 | डॉ.ललित प्रधान | |
| 2 | डॉ.सुषमा तिवारी | |
| 3 | डॉ.हेमंत शर्मा | |
| 4 | डॉ. फागेश्वर साहू | |

# SYLLABUS OF 4 YEARS UG PROGRAM (FYUP)
## AS PER NEP 2020
## (GOVT. DIGVIJAY AUTONOMOUS P G COLLEGE, RAJNANDGAON)
## B.A. (Multiple Major) - DEGREE COURSE
## (Session 2025-26)
## Major 1- SANSKRIT

| | SEMESTER | COURSE TYPE | COURSE CODE | PAPER TITLE | CREDIT | Max marks | ESE | IA |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| THIRD YEAR | V | DSC | | वैदिक साहित्य का इतिहास | 4 | 100 | 80 | 20 |
| | | DSE-I | | वेद | 4 | 100 | 80 | 20 |
| | | DSE-II | | व्याकरण एवं व्याकरण शास्त्र का इतिहास | 4 | 100 | 80 | 20 |
| | | SEC | | योग के मूलभूत तत्व | 2 | 50 | 40 | 10 |
| | VI | DSC | | लौकिक संस्कृत साहित्य का इतिहास | 4 | 100 | 80 | 20 |
| | | DSE-I | | भाषाविज्ञान | 4 | 100 | 80 | 20 |
| | | DSE-II | | काव्य | 4 | 100 | 80 | 20 |
| | | SEC | | प्रोजेक्ट | 2 | 50 | 40 | 10 |

ESE- End Semester Exam, IA-Internal Assessment

Instruction for Question paper setting

End Semester Exam (ESE) for DSC and DSE

There will be 03 sections of question of 80 marks

Section A- section A will be very short answer type questions consisting 8 questions of 2 marks, two question from each unit.

Section B- section B will be short answer type questions consisting 4 questions of 6 marks each, one question from each unit with internal choice.

Section C- section B will be long answer (Discreptive) type questions consisting 4 questions of 10 marks each, one question from each unit with internal choice.

End Semester Exam (ESE) for SEC

There will be 8 questions of 8 marks each, out of which any 5 question to be answer.Total marks will be 40.

Minimum Pass Marks 40%

| Section | Maximum Marks (80) | | Maximum Marks (40) | |
|---|---|---|---|---|
| A | 2 x 8 = 16 | Very short answer type questions consisting 8 questions of 2 marks, two question from each unit. | 8 x 5 = 40 | 8 questions of 8 mark each, out of which any 5 question to be answer. |
| B | 6 x 4 = 24 | Short answer type questions consisting 4 questions of 6 marks each, one question from each unit with internal choice. | | |
| C | 10 x 4 = 40 | long answer (Discreptive) type questions consisting 4 questions of 10 marks each, one question from each unit with internal choice | | |

GOVT. DIGVIJAY AUTONOMOUS P.G. COLLEGE, RAJNANDGAON (C.G.)

# FYUP (CBCS/LOCF Course)

**Department: -SANSKRIT**

| | |
|---|---|
| Session: **2025 - 26** | Program: **B.A.** |
| Semester: **VI** | Subject: **Sanskrit** |
| Course Type: **DSE** I | Course Code: ..... |
| Course Title: | भाषाविज्ञान |
| Credit: **4** | Lecture: **60** |
| M.M. 100 = **(ESE 80+IA 20)** | Minimum Passing Marks: **40%** |

| **Title** | भाषाविज्ञान |
|---|---|
| **Course Learning Outcome:** | ➢ विद्यार्थी भाषा के विकास क्रम से परिचित होंगे<br>➢ भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन की समझ विकसित होगी<br>➢ भाषाई शोध की प्रवृत्ति का विकास |

| **Units** | **Lectures** | **Lectures (15 x 4 = 60)** | **Credits** |
|---|---|---|---|
| **I** | 15 | भाषा की परिभाषा, भाषा की विशेषताएं, भाषा का वर्गीकरण (आकृतिमूलक एवं पारिवारिक) | 1 |
| **II** | 15 | ध्वनियों का वर्गीकरण, ध्वनि परिवर्तन के कारण, मानवीय ध्वनियंत्र, अर्थ परिवर्तन की दिशाएं | 1 |
| **III** | 15 | ध्वनि नियम – ग्रीम, ग्रासमान, वर्नर | 1 |
| **IV** | 15 | भारोपीय भाषा परिवार का परिचय, वैदिक एवं लौकिक संस्कृत में अंतर | 1 |

अनुशंसित ग्रंथ:-

1. भाषाविज्ञान- करण सिंह, साहित्य भंडार,सुभाष बाजार, मेरठ
2. भाषाविज्ञान- भोलानाथ तिवारी,किताब महल,इलाहाबाद
3. भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- डॉ. कपिलदेव द्विवेदी,विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
4. भाषाविज्ञान की भूमिका- राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

| पाठ्यक्रम समिति | | |
|---|---|---|
| क्र. | नाम | हस्ताक्षर |
| 1 | डॉ.ललित प्रधान | |
| 2 | डॉ.सुषमा तिवारी | |
| 3 | डॉ.हेमंत शर्मा | |
| 4 | डॉ. फागेश्वर साहू | |

GOVT. DIGVIJAY AUTONOMOUS P.G. COLLEGE, RAJNANDGAON (C.G.)

# FYUP (CBCS/LOCF Course)

**Department: -SANSKRIT**

| | |
|---|---|
| Session: **2025 - 26** | Program: **B.A.** |
| Semester: **VI** | Subject: **Sanskrit** |
| Course Type: **DSE- II** | Course Code: ..... |
| Course Title: | काव्य |
| Credit: **4** | Lecture: **60** |
| M.M. 100 = **(ESE 80+IA 20)** | Minimum Passing Marks: **40%** |

| **Title** | काव्य |
|---|---|
| **Course Learning Outcome:** | • विद्यार्थी संस्कृत के प्रमुख महाकाव्यों से परिचित होंगे।<br>• महाकाव्यों के अध्ययन से विद्यार्थियों में काव्यशास्त्रीय तत्वों के व्यावहारिक ज्ञान के साथ अर्थबोध की क्षमता एवं शब्दज्ञान में वृद्धि होगी।<br>• आदिकवि वाल्मीकि, विश्वप्रसिद्ध कवि कालिदास एवं महाकवि भारवि की रचनाओं के अध्ययन से विद्यार्थियों में रचनाधर्मिता एवं विभिन्न भाषाकौशल का विकास होगा।<br>• निबंध के अध्ययन से विद्यार्थियों में लेखन कला का विकास होगा। |

| **Units** | **Lectures** | **Lectures (15 x 4 = 60)** | **Credits** |
|---|---|---|---|
| **I** | 15 | रघुवंशमहाकाव्यम् - प्रथम सर्ग श्लोक 1 से 20 तक<br>(व्याख्या एवं आलोचनात्मक प्रश्न) | 1 |
| **II** | 15 | किरातर्जुनीयम्- प्रथम सर्ग श्लोक 1 से 25 तक<br>(व्याख्या एवं आलोचनात्मक प्रश्न) | 1 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| **III** | 15 | मूलरामायणम्<br>व्याख्या एवं आलोचनात्मक प्रश्न | 1 |
| **IV** | 15 | निबंध - 15 वाक्यों में संस्कृत में निबंध लेखन<br>निबंध की प्रकृति वर्णनात्मक रहेगी | 1 |

अनुशंसित ग्रंथ:-


1. रघुवंशमहाकाव्यम्- व्या.पं. लक्ष्मीप्रपन्नाचार्य, कृष्णदास, अकादमी वाराणसी, 2002
2. किरातार्जुनीयम्-व्या. डॉ. अभिराज राजेन्द्र मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद, 1980
3. संस्कृतनिबंधशतकम् - डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी
4. निबंधपारिजात- डॉ. रजनीकान्त लहरी, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी


| पाठ्यक्रम समिति | | |
|---|---|---|
| क्र. | नाम | हस्ताक्षर |
| 1 | डॉ.ललित प्रधान | |
| 2 | डॉ.सुषमा तिवारी | |
| 3 | डॉ.हेमंत शर्मा | |
| 4 | डॉ. फागेश्वर साहू | |

GOVT. DIGVIJAY AUTONOMOUS P.G. COLLEGE, RAJNANDGAON (C.G.)

# FYUGP (CBCS/LOCF Course)

**Department: -SANSKRIT**

| | |
|---|---|
| Session: 2025-26 | Program: **B.A.** |
| Semester: VI | Subject: **SANSKRIT** |
| Course Type: SEC | Course Code: ..... |
| Course Title | योग दर्शन के आधारभूत तत्व (परियोजना कार्य) |
| Credit: 2 | Lecture: 30 |
| M.M. 50 = **(ESE 40+IA10)** | Minimum Passing Marks: **40%** |

| | |
|---|---|
| **Title** | योग दर्शन के आधारभूत तत्व (परियोजना कार्य) |
| **Course Learning Outcome:** | ➢ योग विधा के आधारभूत तत्वों का ज्ञान प्राप्त होगा।<br>➢ योग की ओर विद्यार्थियों की रुचि जागृत होगी।<br>➢ योग कौशल का विकास विद्यार्थियों के स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि मे सहायक होगा।<br>➢ योग के क्षेत्र में रोजगार के अवसर तलाश सकेंगे।<br>➢ प्राचीन योग दर्शन को आधुनिक समय में प्रतिस्थापित करने में सहायता प्राप्त होगी। |

| Units | Lectures | Lectures (15 x 2 = 30) | Credits |
|---|---|---|---|
| I | 06 | योग दर्शन- योग का अर्थ एवं परिभाषा,उद्देश्य एवं महत्त्व (परियोजना कार्य) | 1 |
| II | 06 | योग दर्शन का उद्भव एवं विकास- (सामान्य परिचय अपेक्षित है) (परियोजना कार्य) | 1 |
| III | 10 | अष्टांग योग का सामान्य परिचय- (परियोजना कार्य) | 1 |
| IV | 08 | प्रमुख भारतीय योगाचार्यों का परिचय – आदि शंकराचार्य, महर्षि पतंजलि, स्वामी विवेकानन्द, योगी गोरक्षनाथ, महर्षि दयानंद सरस्वती, श्री अरविंद, महर्षि महेश योगी (सभी का सामान्य परिचय अपेक्षित है) (परियोजना कार्य) | 1 |

अनुशंसितग्रन्थ –


1. पातंजल योगसूत्र- गीताप्रेस, गोरखपुर
2. भारतीय दर्शन- चंद्रधर शर्मा, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन

3. भारतीय दर्शन- आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा मंदिर प्रकाशन, वाराणसी
4. वेदों में योग विद्या- डॉ. योगेन्द्र पुरुषार्थी, यौगिक शोध संस्थान, हरिद्वार
5. योग विज्ञान- स्वामी विज्ञानानन्द, योग निकेतन ट्रस्ट, ऋषिकेश

| पाठ्यक्रम समिति | | |
|---|---|---|
| क्र. | नाम | हस्ताक्षर |
| 1 | डॉ. ललित प्रधान | |
| 2 | डॉ. सुषमा तिवारी | |
| 3 | डॉ. हेमंत शर्मा | |
| 4 | डॉ. फागेश्वर साहू | |